International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 55-59

किशोरों की शैक्षिक आकाँक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि

डॉ0 नरेन्द्र कुमार सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षासंकाय राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सरांष

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अनुसंधान है जिसे सर्वेक्षण विधि द्वारा इलाहाबाद जनपद की समष्टि कक्षा–11 हेतु 500 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया था जो क्षेत्र व लिंग के आधार पर आधे–आधे थे। शैक्षिक आकाँक्षा स्तर के मापन हेतु वी•पी• शर्मा का मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया था। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रसरण विश्लेषण तथा पीयरसन सःसम्बंध गुणांक की गणना की गयी थी। प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि शैक्षिक आकाँक्षा व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसम्बंध होता है तथा लिंग व क्षेत्र के आधार पर शैक्षिक आकाँक्षा भिन्नता रखती हैं।

मूल शब्द: शैक्षिक आकाँक्षा, शैक्षिक उपलब्ध, क्षेत्र, लिंग, प्रसरण विश्लेषण, समष्टि न्यादर्श आदि।

प्रस्तावना

माध्यमिक स्तर शिक्षा की संरचना में मध्य का स्तर होता है जहॉ पर से विद्यार्थी किशोरावस्था में गुजरता है क्योंकि इसके पहले किशोरावस्था की पूर्वावस्था तथा बाद की अवस्था परिपक्वता बढ़ती चली जाती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में उर्जा की अपार मात्रा होती है जिससे वह विभिन्न गतिविधियों में लगा रहता है। शिक्षा का उद्देश्य ही सर्वांगीण विकास का है जिसे शिक्षण संस्थायें सकारात्मक दिशा प्रदान करते हुये उर्जा प्रवाहमय को दिशा के उद्देश्य की तरफ ले चलते हैं जिसमें विद्यालयी परिवेश उसकी उर्जा स्तर को पोषण प्रदान करते हुये लक्ष्य की तरफ गतिशील करते हैं। विद्यार्थियों के विकासशीलता में समाज के योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि सामाजिक परिवेश से ही वह प्रेरक दिशा प्रदान करता है जिससे भावी नागरिकता का प्रशिक्षण किशोरों को प्राप्त होता है और नवीनीकरण का प्रत्यय विचारों में, ज्ञानवृद्धि में, पहनावा, भोजन, चिकित्सा, यांत्रिकी इत्यादि में आता हैं, क्योंकि यह संसार मिथ्या होने के साथ–साथ परिवर्तनशील भी हैं। विद्यार्थी भी अपने में परिवर्तनशीलता के साथ–साथ परिपक्वता की तरफ बढ़ता है जिसमें विश्वबंधुत्व का भाव वैश्वीकरण का रुप ले चुका है अर्थात् पूरा विश्व गॉवों जैसी सुविधाओं में सूचना और तकनीकी की सहायता से बदल चुका है। गॉवों की सुख सुविधायें जैसे व्यवस्थित थी, ठीक उसी प्रकार विश्व के सभी लोग एक–दूसरे की सुख व सुविधाओं से परिचित होने लगें है जिससें वे अपने को भी उसी तौर–तरीके में सभी क्षेत्रों के लिये तैयार करते हैं और इन प्रक्रियायों को ही आधुनिकीकरण कहा जाता है। आधुनिकीकरण तथा भौतिकता के इस युग में स्वाभाविक है कि विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति सोच और प्रत्याशा भी बदल रही है जिससे उनकी शैक्षिक आकॉक्षा में भी वृद्धि व परिवर्तन होना शुरु हुआ है।

‘‘शिक्षा के बिना विकास की कल्पना ही नही की जा सकती है। सामान्य जीवन की बात हो या कैरियर की, शिक्षा का अपना ही महत्व है। जब हम गणतंत्र बने थे, उस समय हम इस क्षेत्र में कहीं पीछे खड़ें दिखायी देते थे। साक्षारता दर 18.9 प्रतिशत ही थी। उच्च शिक्षा की बात तो छोड़िये, प्राइमरी और हायर सेकेन्ड्री स्कूलों की संख्या भी ऊँट के मुँह में जीरे की तरफ थी। महज 27 विश्वविद्यालयों एवं नाममात्र की शिक्षक संख्या के सहारे ही उच्च शिक्षा की नैया चल रही थी। शिक्षा की अहमियत को समझते हुये सरकार ने सन् 1968, 1986, 1992, में परिवर्तनों के लियें नीतियों का निर्माण किया, जिसके सुखद नतीजे आज समाने हैं। आज 14 साल तक के बच्चों के लिये शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया है। राष्ट्रीय साक्षरता का स्तर भी 65 प्रतिशत तक पहुॅच गया है। प्रोफेशनल कालेजों की संख्या भी निरन्तर बढ़ रही है, यह केवल तभी सम्भव हो सका जब हम बहुत बड़ी संख्या में विद्यालयों, तकनीकि संस्थाओं आदि का निर्माण किया गया। आज भी इस दिशा में इस काम जारी है। सरकार शत–प्रतिशत् साक्षारता के लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। गवर्नमेंट स्तर पर हर गॉव में स्कूल और जिलों में कालेजों के निर्माण की योजना है। यह स्थितियॉ उन लोगों के लिये लाभदायक होगी जो इस एज्यूकेशन फील्ड में जाकर काम करना चाहते हैं।

आजादी के समय जो शिक्षा की आवश्यकता को समझते थे, उनमें से बहुत कम ही व्यवसायिक शिक्षा को वरीयता देते थे, उस समय परम्परागत् शिक्षा का ही चयन था। अब इस सोच में भी बदलाव आया आज बच्चा हाईस्कूल में भी नहीं पहुॅच पाया कि माता–पिता उसे तकनीकि क्षेत्र में भेजना चाहते हैं और यह तय करके उसे उसी दिशा में तैयारी कराने व कोचिंग शिक्षा हेतु भेजते हैं। मेडिकल, इंजीनियरिंग, आई• टी•, रिसर्च फाइनेंस इन सभी सेक्टर्स में सरकारी जॉब भी बहुत है। इसलिये टेक्निकल एज्यूकेशन का क्रेज भी बढ़ता जा रहा है।’’ परिवर्तन की बयार युवावों के सहारे ही आगे बढ़ती है। 26 जनवरी 1950 को भरोसा जताया गया था कि भारतीय युवा शक्ति अपने परिश्रम से खस्ताहाल हो चुके इस मुल्क की तकदीर और तस्वीर को बदलने का काम करेगी। धीरे–धीरे ही सही लेकिन यह स्वप्न हकीकत में बदल रहा है। ऐसी भविष्यवाणी की जाती रही है कि 21 वीं शदी के पहले दशक में पूर्व का एक देश वैश्विक महाशक्ति बन जायेगा। देश का हर नागरिक जो वतन से मोहब्बत करता है, यह उपलब्धि भारत के हाथ लगते देखना चाहता है। यही कारण है कि गॉव का भोला–भाला युवक भी अब सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर सहज पकड़ हासिल कर रहा है। आज युवा प्रतियोगी परीक्षा से लेकर चिकित्साा तक इन्जीनियरिंग, और टेक्नोलाजी हर विद्या में अपनी क्षमता का परचम लहरा रहे हैं। ग्रामीण हों या फिर शहरी, यवावों ने अपने लक्ष्य से निगाह हटाने की गल्ती नहीं की हैं। आज हम कह सकते है कि अगर भारतीय युवावों की रचनात्मक शक्ति का सही मूल्यांकन किया जायेगा तो तो निश्चित ही युवा भारत के युवा सपनों को नयी उड़ान मिल जायेगी।

इसी दिशा में प्रस्तुत शोध की रुपरेखा है कि युवावों विशेषकर किशोरों की शैक्षिक आकॉक्षा का स्तर ऊँचा उठा है और वे अपने कैरियर को लेकर चिन्तित रहते हैं तथा उस दिशा में प्रयास कर रहे हैं। आकॉक्षा स्तर का सम्बंध जीवन लक्ष्य से है। किसी भी लक्ष्य या मूल्य आदि की प्राप्ति इच्छा आकॉक्षा कहलाती है तथा इन लक्ष्यों व मल्यों को प्राप्त करने के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता या स्तर कहलाता है। आकॉक्षा स्तर से व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है। जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने के लिये प्रयास करता है। आइजनेक' (1972) और उनके सार्थियों के अनुसार– ''आकॉक्षा स्तर वह सम्भावित लक्ष्य है जो एक व्यक्ति एवं अपने कार्य निष्पादन के समय निश्चित करता है।'' आकॉक्षा स्तर को उनकी प्रवृत्ति के कारण संज्ञानात्मक अभिप्रेरणा कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में आकॉक्षा स्तर भिन्न–भिन्न पाया जाता है। आकॉक्षा और आकॉक्षा स्तर व्यक्ति के जीवन निर्वाह को प्रभावित करता है। एक व्यक्ति क्या बनने की आकॉक्षा रखता है, वह इस दिशा में कितना प्रयास या सफलता प्राप्त करना चाहता है, यह सब उस व्यक्ति की आकॉक्षा पर निर्भर करता है, परन्तु यह बहुधा उन व्यक्तियों में होता है जो रिर्जव कम रहते हैं और आकॉक्षा स्तर उच्च श्रेणी का होता है, उच्च श्रेणी के आकॉक्षा स्तर के कारण जब योग्यताओं के अभाव में व्यक्ति इस स्तर के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है तो वह चिंतित, असंतुलित या कुसमायोजित हो जाता है, जो उसके कार्य व्यवहार में परिलक्षित होने लगता है। इसका पीरणाम यह होता है कि वह अपेक्षित कार्य निष्पादन नहीं कर पाता है और न ही वह अपने कार्य से सन्तुष्ट रह पाता है परिणामस्वरुप वह समाज को वह सब नहीं दे पाता जो देना चाहता है जिससे उसका मूल्य भी कम हो जाता है।

आकॉक्षा स्तर व्यक्ति में निहित एक अन्तःप्रेरणा है जिससे उर्जान्वित होकर व्यक्ति अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। आकॉक्षा या इच्छा के अनुसार लक्ष्य न प्राप्त होने पर वह कुण्ठित हो जाता है।

श्रीवास्तव (1980) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों में शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिये वृद्धि हेतु रुचि और पारिवारिक स्तर का पूर्वानुमान पर अध्ययन करते हुये पाया था कि शैक्षिक निष्पादन उक्त चरों से घनिष्ट रुप से सहसम्बंधित है।

मेहरोत्रा, एस•पी• (1989) ने शैक्षिक सम्प्राप्ति हेतु पूर्वानुमान को महत्वपूर्ण बताया है क्योंकि इससे सकारात्मक दिशा को बल मिलता हैं।

एजम्टन (1930) ने विश्वविद्यालय में शैक्षिक भविष्यवाणी हाईस्कूल के विद्यार्थियों में प्रवेश के समय किये थे जो उनके शैक्षिक निष्पादन से घनिष्ट सहसम्बंध रखते थे।

समास (1931) ने बताया कि केवल बुद्धि परीक्षण के आधार पर ही सेकेन्ड्री स्कूल की परीक्षा के सन्दर्भ में पूर्वानुमान कर सकता है, यदि यह पूर्वानुमान गणित व अंग्रेजी परीक्षणों के आधार पर किया जाय तो अधिक प्रभावशाली होता है।

स्टीवेन्स (1991) ने बताया कि बुद्धि परीक्षणों द्वारा गणित व भौतिक विज्ञानों के शैक्षिक निष्पादन हेतु अच्छी भविष्यवाणी की जा सकती है।

इमेट (1954) ने सामाजिक समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन करते हुये बताया कि बुद्धि परीक्षण, शैक्षिक निष्पादन के लिये अच्छी भविष्यवाणी करते हैं।

राइट (1923) ने बताया कि बुद्धि परीक्षणों की तुलना में विद्यालयी अंक अधिक भविष्यवाणी करने की क्षमता रखते हैं।

कोर्टिस (1925) बच्चे क्यों सफल होते हैं, पर अध्ययन करते हुये पाया कि पूर्व परीक्षा भविष्यवाणी उनकी सफलता की अच्छी करते हैं इसमें केवल 8 प्रतिशत की त्रुटि ही हो सकती है।

अग्रवाल (2002) ने अपने अध्ययन में देखा कि विष्वविद्यालयी परीक्षा के समय विद्यार्थियों का अनुमानित अंक बाद में प्राप्त परिणामों में धनात्मक सहसम्बंध पाया जाता हैं।

मिश्रा (2009) ने शैक्षिक आकॉक्षा के लिये बताया कि प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बी•एड्• के विद्यार्थियों में अधिक मात्रा में पायी जाती है।

नाग्रेन्द्र (2010) ने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति की छात्राओं की तुलना में सामान्य जाति की छात्रायें अधिक सम्प्राप्ति वाली होती हैं।

सिंह (2010) ने अध्ययन से देखा कि स्ववित्तपोशी तथा अनुदानित विद्यालयों के शिक्षकों के आकॉक्षा स्तर सार्थक भिन्नता रखते हैं।

मौर्या (2012) न अपने अध्ययन के दौरान आकॉक्षा स्तर को शैक्षिक उपलब्धि हेतु महत्वपूर्ण कारक पाया था।

आर• एन• (2014) के 'शोध पत्र' शैक्षिक आकॉक्षा तथा आधुनिकी करण से स्पष्ट होता है कि आधुनिकता का मुल्य शैक्षिक रुप से आकॉक्षा अधिक रहे हैं।

राय श्वेता (2017) के अध्ययन 'शैक्षिक आकॉक्षा तथा अभिनव प्रयोग' शिक्षा जगत के लिये बहुत ही घनिष्टतम रुप सेसम्बंधित हैं।

उपरोक्त सभी अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक आकॉक्षा विद्यार्थियों की एक महत्वपूर्ण चर है जिसका मापन किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी के प्रत्याशित व्यवहार के लिये वर्तमान में किये जाने वाली प्रयास की मात्रा का पता लगता हैं।

किसी क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे उस कार्य क्षेत्र के उपलब्धि परीक्षणों के प्राप्त अंकों द्वारा निश्चित किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य हैं– ''प्राप्त ज्ञान या शालेय विषयों में विकसित प्रवीणता या कुशलता जो कि प्रायः परीक्षण में प्राप्त अंकों द्वारा या शिक्षक द्वारा दिये अंकों या दोनों के द्वारा निश्चित की गई हो।''

रस्तोगी के• जी• (1994) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सःसम्बंध धनात्मक पाया था। जैन ए•के• (2007) ने अध्ययन आदत व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च स्तर पर सःसम्बंध पाया। सी• एच• (2011) द्वारा भाषा अधिगम व बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि धनात्मक सःसम्बंध पाया था। सिंह (2013) विज्ञान वर्ग के सृजनशील विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर पर पायी थी। रमनलाल (2016) ने शैक्षिक उपलब्धि को अधिगम वातावरण का प्रतिफल बताया हैं। यादव जय प्रकाश (2017) ने स्नातकोत्तर स्तर पर विशय वस्तु के विश्लेषणात्मक प्रयोग में पाया कि जिस विद्यार्थी में विश्लेषणात्मक तर्क अच्छा व उच्च स्तर पर होता है उसकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती हैं।

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक आकॉक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि घनिष्टता रखती हैं जिसकों ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्ताओं ने अपना शोध कार्य पूर्ण किया हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकॉक्षा तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया था।

1. ग्रामीण तथा शहरी छात्र व छात्राओं के शैक्षिक आकॉक्षा के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक आकॉक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बंध नहीं हैं।

- **विधिपरक विज्ञानः–**प्रस्तुत अध्ययन की शोध अभिकल्प निम्नलिखित थी।
- **शोध का प्रकारः–** विवरणात्मक था।
- **शोध विधिः–** सर्वेक्षणात्मक थी।
- **समष्टिः–** इलाहाबाद जनपद के समस्त कक्षा 11 में अध्ययनरत् विद्यार्थी प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या थे।

न्यादर्श
कुल 500 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया था जो विभव क्षेत्र में आधे–आधे थे।

तालिका 1: न्यादर्श का क्षेत्र व लिंग के आधार पर विवरण

समूह	पुरुष	महिला	योग
ग्रामीण	125	125	250
शहरी	125	125	250
योग	250	250	500

प्रयुक्त सांख्यकीय तकनीकिः– ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रसरण विश्लेषण तथा पियर्सन सःसम्बंध गुणांक की गणना की गयी थी।
शोध उपकरणः– ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मानकीकृत मापनी प्रयुक्त की गयी थी जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

शैक्षिक आकॉक्षा मापनीः–
डॉ•वी•पी• शर्मा तथा डॉ• अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक मापनी का पी• प्रारुप था जिसमें कुल 45 कथन था। परीक्षण के निर्माण का आधार विशिष्टता थी। इसको निर्माण करते समय अवबोध स्तर, शैक्षिक परिपक्वता और विद्यार्थियों में वृद्धि के सभी बिन्दुओं पर ध्यान दिया गया था। यह परीक्षण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिये था यह स्केल पास्ट एक्सपीरियेंस (Pe), एमाउंट ऑफ इफोर्ट्स (Ae) तथा एबिलिटी एण्ड कैपेसिटी (Ac) को आधारित करते हुये बनायी गयी थी।

$$EAS= f (Pe \times Ae \times Ac)$$

इस परीक्षण में प्रत्येक कथन पर अ और ब दो आयाम हैं, इसमें से किसी एक पर (सही) का निशान लगाना था। इसे पूरा करने में 25 मिनट समय लगता है। इस परीक्षण की परीक्षण पुर्नपरीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.98 तथा वैधता गुणांक 0.692 था। (सही) का निशान वाले कथन पर (1) अंक तथा दूसरे शेष पर शून्य अंक प्रदान करना था।

तालिका 2: FAS का अंकन चार्ट

3	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
A	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0
B	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1
कथन	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
A	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0
B	1	1	1	1	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1
कथन	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45
A	0	0	1	0	1	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0
B	1	1	0	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1

तालिका 3: मानक

A	33 से ऊपर	अति उच्च
B	27–32	उच्च
C	25–26	औसत से ऊपर
D	20–24	औसत
E	18–19	औसत से नीचे
F	11–17	नीचे
C	10 से नीचे	बहुत नीचे

शैक्षिक उपलब्धि
शैक्षिक उपलब्धि के लिये कक्षा – 10 में बोर्ड द्वारा प्राप्त किये गये अंकों को ही आधार माना गया था। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले 70 प्रतिशत से अधिक अंक वाले तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी थे।
विश्लेषण व व्याख्याः– शोधकर्त्ताओं ने प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर निम्नलिखित विश्लेषण व व्याख्या किया हैं।

तालिका 4: विद्यार्थियों की शैक्षिक आकॉक्षा स्तर के लिये क्षेत्र (ग्रा•गश•) तथा लिंग (छात्र ग छात्रायें) की प्रसरण विश्लेषण तालिका

विवरण के स्रोत	की	वर्गो के योग SS	माध्य वर्गो के योग MSS	F अनुपात	सार्थकता स्तर 3.86
क्षेत्र (ग्रा गश•)	1	264.51	264.51	10.65	.05
लिंग (छात्र ग छात्रायें)	1	248.32	248.32	10.01	.05
अर्न्तक्रिया (क्षेत्र ग लिंग)	1	209.42	209.42	8.43	.05
त्रुटि	496	12318.57	24.83	–	–
योग	499	13040.82			

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि शैक्षिक आकॉक्षा स्तर के लिये ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के बीच प्रसरण विश्लेषण का अभिकलित मान 10.65, और छात्र व छात्राओं के बीच 10.01, जबकि अर्न्तक्रियात्मक मूल्य 8.43 थे, जो की (1, 496) पर .05 सार्थकता स्तर के लिये 3.86 से अधिक थे जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना– ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक आकॉक्षा स्तर का क्षेत्र व लिंग के संदर्भ में सार्थक अन्तर नहीं हैं'' को अस्वीकार कर लिया जाता हैं क्योंकि विश्लेषणोपरॉत यह स्पष्ट हुआ कि शैक्षिक आकॉक्षा स्तर के लिये क्षेत्र व लिंग दोनों में भिन्नता होती है। प्रस्तुत परिणाम का समर्थन नागर (2007) का

अध्ययन करता हैं। प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि शैक्षिक आकॉक्षा भारतीय युवकों तथा युवतियों में बढ़ी हैं क्योंकि शिक्षा के महत्व को लोग समझने लगे हैं, परन्तु रुढ़िवादिता, हठधर्मिता तथा ग्रामीण परिवेशों में शैक्षिक संसाधनों का अभाव ही इस परिणाम के जिम्मेदार कारक हो सकते हैं।

तालिका 5: विद्यार्थियों के शैक्षिक आकॉक्षा स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बंध विश्लेषण तालिका

चर	स्वतंत्र संख्या	सहसम्बंध गुणांक
शैक्षिक आकॉक्षा स्तर	498	0.23
शैक्षिक उपलब्धि		

at .01 level of significance = 0.115

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक आकॉक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच पियर्सन सःसम्बंध गुणांक के अभिकलित मूल्य 0.23 प्राप्त हुये हैं जो की (498) के .01 सार्थकता स्तर पर 0.115 से अधिक है जिससे शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है, अतः स्पष्ट हो जाता है कि शैक्षिक आकॉक्षा स्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सहसम्बंध रखता हैं, अर्थात् शैक्षिक आकॉक्षा स्तर जितना ही उच्चतम दिशा की तरफ बढ़ेगा, उसी दिशा में शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती हैं। इस तरह के परिणाम बिपिन (2005) के अध्ययन से प्राप्त हुआ था जो प्रस्तुत अध्ययन का समर्थन करता हैं। इस परिणाम के सम्भवतः कारण हैं कि विद्यार्थी भविष्य की शिक्षा के लिये प्रत्याशा निर्धारित करता हैं जिसकी प्राप्ति हेतु सक्रिय रहता है जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती हैं।

शोध निष्कर्शः– प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्श प्राप्त होता हैं कि माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र तथा लिंग के आधार पर शैक्षिक आकॉक्षा स्तर विद्यार्थियों में भिन्न–भिन्न होती हैं और शैक्षिक आकॉक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सकारात्मक सःसम्बंध होता हैं।

शैक्षिक महत्वः

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर किशोरों को आधार मानकर किया गया है जो भारत के भविष्य हैं और इसे सॅवारने के कर्णधार है, हमने इन्हें जो भी संस्कार दिया हैं, जो भी रीति–रिवाज और धर्म इन्होंने धारित किया है क्या उसका पोषण सही–सही हो पा रहा हैं। इनके पोषण की क्षमता में अन्तः विकास हो पा रहा है यही सभी कारकों की पहचान करना ही प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य में निहित था। हमारे युवा अपने शिक्षा के प्रति कितना आकॉक्षित है और उस दिशा में क्या कर रहें हैं, और क्या करेंगे क्योंकि एक मूल्य आजकल आधुनिकता का जुड़ गया हैं जो इन्हें आगे की तरफ सोचने के लिये आद्यतन साधन मुहैया करा रहा है। विश्व की तरफ सोचने के लिये आद्यतन साधन मुहैया करा रहा है। विश्व की शिक्षा, अर्थ, चिकित्सा और यांत्रिकी व प्रौद्योगिकी का परिचय भूमंडलीयकरण के युग में इतनी आसान हो चुकी है कि हमारे बच्चे घर बैठे टेलीविजन, और इण्टरनेट, कम्प्यूटर तथा ई• पुस्तकालय से अपने को आद्यतन बना रहे हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था संसाधनों में आधुनिक हो रही है और अभी तक जो अध्ययन हो रहे हैं की जानकारी भी तुरन्त वेबसाइट पर उपलब्ध है ऐसे में प्रस्तुत अध्ययन शैक्षिक आकॉक्षा के स्तर को मापकर यह देखा कि इसमें वृद्धि हुयी है जो सबके लिये है कहीं न तो क्षेत्र प्रभाव दिखता है, और न ही कहीं लिंग का प्रभाव दिखायी दिया। अतः हमारा समाज भी अपने साहित्य में परिवर्तन किया हैं, उसमें भी आधुनिकता दिखाई देने लगी है, इसका छोटा सा उदाहरण घर–घर में मोबाइल का होना, घर–घर में टी•वी• रिमोट को चलाना आदि सभी व्यवहार तकनीकि कहे जाते हैं जो समाज को आधुनिकता से ही हैं। लोगों के जीवन मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है, साथ ही पीढ़िया सुधार की तरफ है, परन्तु शेष यह देखने को मिल रहा है कि समाज में विखराव झूठा कथन, चार सौबीसी, ड्रग्स का कारोबार, नशे की प्रवृत्ति में वृद्वि हुयी है, महिलाओं और लड़कियों में असुरक्षा का भाव वृद्धों में अकेलापन इत्यादि सभी हमें आधुनिकता व भौतिकता के प्रति लगाव के कारण ही झेलने को मिल रहे हैं। हमारे बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में जितनी तेजी से आगे आधुनिकता का सहारा लिये हुये आगे बढ़ रहे हैं उतनी ही तेजी से मूल्यों का ह्रास भी होता जा रहा हैं जिससे अनुशासनहीनता, सामाजिक विध्वंश, दहेज उत्पीड़न, जातिवाद, भाई–भतीजावाद इत्यादि में भी वृद्वि हो रही है क्योंकि आधुनिकता की शिक्षा हमारे बच्चों को नौकरी केन्द्रित कर रही है जिससे साक्षरता में वृद्वि हो रही है, परन्तु साक्षारता में कमी आ रही है। अतः शोधकर्त्ता प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह कहना चाहता है कि हमारी शैक्षिक आकॉक्षा स्तर में विकास हो, हम आधुनिकता का पूरा फायदा उठावें, अपने बच्चों के ज्ञान की वृद्धि करें परन्तु मूल्यों को केन्द्र में रखकर तथा एक अनूठा समाज बन पायेगा और मूल्यगत् ढॉचे को धारित कर सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एस•सी•. :प्रेक्षित व प्रत्याशित प्राप्तांकों में तुलनात्मक अध्ययन, शोधपत्र, भारतीय शिक्षा शोध, भारतीय शिक्षा शोधपत्रिका निरालानगर लखनऊ, पाल XXXIV. 2002.
2. ओड़, एल• के•: शिक्षा के नूतन आयाम, जयपुरय राजस्थान हिन्दी अकादमी, 1978.
3. आर•ए•. '' शैक्षिक आकॉक्षा तथा आधुनिकीकरण'' शोध पत्र 'परिचारिका,' 2014.
4. कोर्टिस, एस•ए•. बच्चें क्यों सफल होते हैं, विद्यालय में बच्चों के प्राप्ति को प्रभावित करने वाले कारकों का एक अध्ययन,पी–एच•डी• यूनिवर्सिटी ऑफ मिशीगन. 1925, 144(2).
5. कुमार, नागेन्द्. सामान्य जाति तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की आकॉक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, विद्यामेघ, टी•पी• नगर मेरठ 2010.
6. जोश. दैनिक जागरण, बुधवार 26 जनवरी 2011.
7. जैन,एस•के•. ''स्टडी हैविट्स एण्ड एकेडमिक एटेनमेंण्ट इन यू•पी• कालेजेज'' फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1974. 1967, 330.
8. जै•ए•के•. ''अध्ययन आदत व शैक्षिक उपलब्धि में सम्बंध'' शोध पत्र NDER जौनपुर, 2007.
9. दैनिक जागरण ''जोश आगे बढ़ने का जमाने के साथ', 2005.
10. नागर.''शैक्षिक आकॉक्षा स्तर शोध पत्र NDER vol.2 जौनपुर, 2005.
11. बिपिन. ''crippled and there aspirations'' शोध पत्र NDER vol.2 जौनपुर, 2005.
12. मेहरोत्रा, एस•पी•. हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन का बुद्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर, चिन्ता, व्यक्तित्व तथा समायोजन के साथ सह सम्बंध का एक अध्ययन, पी– एच•डी• शिक्षाशास्त्र कानपुर विश्वविद्यालय, 1989.
13. मिश्रा, ए•के• बी•एड्•. प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक आकॉक्षा का अध्ययनशोधपत्र, माडर्न एज्यूकेशनल थाट वाल. 2009, 8.
14. मौर्या सुरेश आकॉक्षा स्तर व शैक्षिक उपलब्धि' शोधपत्र सेमिनार 11–12 नवम्बर 2012 राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर, 2012.
15. यादव, रुचि. ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' एम•एड्• लघुशोध–प्रबन्ध, सम्बद्व वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय जौनपुर, 2006.

16. यादव जय प्रकाश. 'परास्नातक स्तर पर विशयवस्तु का विश्लेषणलघुशोध–प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर, 2017.
17. रस्तोगी के•जी•. ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में उपलब्धि तथा 'बुद्धिलब्धि में सम्बंध' लघुशोध–प्रबन्ध, टी•डी• कालेज जौनपुर, 1994.
18. रामलाल'. अधिगम वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि शोध पत्र शिक्षक अभिव्यक्ति, हंडिया पी•जी• कालेज इलाहाबाद• 2016.
19. राय श्वेता. 'शैक्षिक आकॉक्षा तथा अभिनव प्रयोग शोध पत्र वर्कशाप 2 जनवरी 2017 शिक्षा संकाय राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर, 2017.
20. शुक्ल, पवन कुमार. ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में उपलब्ध सुविधाओं के सन्दर्भ में किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों, अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक निश्पत्ति का अध्ययन, शिक्षा संकाय राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर, 2009.
21. सी•एच•. 'भाशा अधिगम व बद्धि का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बंध शोध पत्र 'विद्यामेद्य टी•पी• नगर मेरठ, 2011.
22. 22– सिंह ए•के•. सृजनशीलता व शैक्षिक उपलब्धि शोध पत्र शिक्षक अभिव्यक्त हंडिया पी•जी• कालेज इलाहाबाद•, 2013.